ग्रामीण परिवेश की विविधता और उसके जटिल पहलू

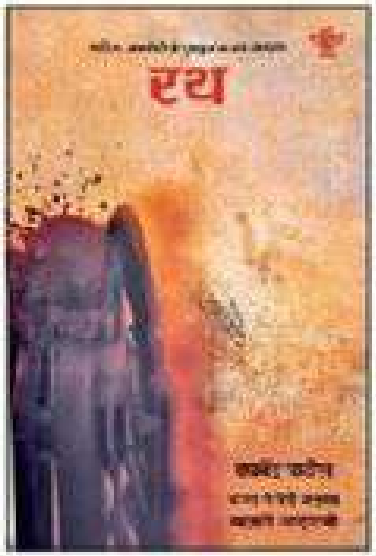

उपन्यास 'रथ' की शुरुआत स्वामप्पा और पत्रकार पाटील की मुलाक़ात से होती है और अंत में भी स्वामप्पा और पत्रकार की अंतिम और दु:खद भेंट ही देखने को मिलती है। बतौर प्रमुख नायक- स्वामप्पा, धावैय्या, पत्रकार और गोंदलिग्या की जीवनगाथा पाठकों को गांव के दर्द और संघर्षों से अवगत कराती है। इसमें एक तरफ़ जहां गांव-क़स्बों में गिरते मूल्यों और संवेदनहीनता की तीक्ष्ण अभिव्यक्ति है वहीं दूसरी ओर अशरीरी निरपेक्ष प्रेम की अवधारणा, त्याग और सेवा पाठकों को सुकून भी देती है। कुल मिलाकर, 'रथ' स्वतंत्र भारत के ग्रामीण परिवेश की विविधता और उसके जटिल पहलुओं को प्रभावी ढंग से उजागर करता है।। -**आनंदिता अत्रे**

साहित्य अकादेमी / रथ/
राघवेन्द्र पाटील/ 150 रुपये